सद्गुरु तत्त्व बोध
SADGURU
TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 31
अंक – 121 | जून – 2013

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

।। ऊँ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ऊँ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

।। प्रसाद ।।

गुरूबंधु भगिनीयों से,

वं. दादाजी कहते थे कि पारमार्थ करना जितना आसान है, उतना ही मुश्किल प्रपंच करना है। प्रपंच करते समय हमें अपने परिवार के समाज के अपने आसपास के व्यक्तियों की मर्जी का ध्यान रखना पड़ता है, जो कि बहुत ही कठिन काम है। कितनी भी कोशिश करने पर भी सबको खुश रखना काफी मुश्किल बात होता है और फिर खुद की खुशी ढुंढ़नी पड़ती है। परमार्थ करते समय सिर्फ एक की याने ईश्वर की मर्जी सम्भालनी है और ईश्वर को कुछ भी खुद के लिए कोई अपेक्षा नहीं होती तो जितनी खुशी उसे देने का प्रयास हम करेंगे उतनी ही खुशी हमें खुद को प्राप्त होती है। इसलिए संसार में जीवन बिताते समय सबसे आसान है, ईश्वर की मर्जी सम्भालने का प्रयास करना याने परमार्थ करना। लेकिन संसार का हर एक व्यक्ति यह आसान चीज़ छोड़कर प्रपंच में यशस्वी होने का प्रयास मरते दम तक करता रहता है लेकिन वह प्रपंच परमार्थ के बगैर यशस्वी नहीं हो सकता; यह न समझते हुए अपनी पूरी जिन्दंगी प्रंपच के सवालों में उलझा देता है।

इस तरह प्रपंच से परेशान हुआ आदमी जब कार्यकेन्द्र पर आता है तब यहाँ से उसे प्रसाद दिया जाता है, वह परमार्थ करने के लिए नहीं तो उसकी प्रपंच की उलझनों के पीछे जो कर्म की प्रतिकूलता है, उसे विमोचित करने के लिए। और यह काम जब गुरूशक्ति अपने आप करती है तब बताई हुई सेवा उसे परमार्थ सीख और उसके अनुभव का लाभ होता है; जिससे वह आदमी खुद के विकास के लिए न समझते हुए उपासना करने लगता है। वं. दादाजी ने सिद्ध करते हुए प्रसाद के माध्यम से गुरूशक्ति उसके जीवन में कार्य करने लगती है।

अपने इस गुरूमार्ग में प्रसाद तीन प्रकार के होते है :

1. प्राशन करने वाला प्रसाद (खाने के लिए)

2. धारण करने वाला प्रसाद

3. पूजन करने वाला प्रसाद

1. प्राशन करने वाला प्रसाद :

जो प्रसाद हम सेवन करते है, उससे किस प्रकार दुवा मिलती है? जो प्रसाद हम भगवान के सामने रखते है उसका मायना क्या है? तीर्थ का महत्व क्या है? क्या वह प्रसाद/तीर्थ भगवान करते हैं?

पहले हम यह देखते हैं कि प्रसाद/नेवैद्य किस प्रकार दिखाया जाता है और वैसे ही क्यों?

इस विश्व में पंचमहाभूत तत्व है, पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश। इन पंचमहाभूत तत्वों का आपस में प्रमाण (Proportion) निश्चित होता है। ईश्वरीय शक्ति या आत्मिक शक्ति याने तेज और आकाश तत्व है। हमारे शरीर में भी इन पंचमहाभूत तत्वों का प्रमाण निसर्ग के अनुसार निश्चित रहना (1:3:11:21:108) जरूरी होता है लेकिन हमारी आदतों की वजह से हमारा शरीर पृथ्वी, आप और वायु तत्व से प्रधान हो जाता है।

जब इन पंचमहाभूत तत्वों का संतुलन बिगड़ता है तो आपत्ति आती है तो उन्हें संतुलित रखने के लिए ईश्वरीय शक्ति या आत्मिक शक्ति के माध्यम से तेज और आकाश तत्वों की धारणा करनी होती हैं यह तेज और आकाश तत्व निसर्ग से सीधे धारण करना मुश्किल होता है, जिसे लिए हमारे माध्यम का विकास होना आवश्यक होता है। यह विकास होने तक इन दो तत्वों की धारणा सीमित स्वरूप में ईश्वरीय उपासना या सद्कर्म करने से होती है। इन तेज और आकाश तत्वों को आह्वान करने के लिए वायु तत्व के माध्यम का उपयोग होता है। इसीलिए नैवेद्य या प्रसाद भगवान को दिखाते समय वायु तत्वों को पांच भागों का आह्वान करने, उनकी प्रार्थना करके "वह प्रसाद ब्रह्म स्वरूप हो", इस प्रकार प्रसाद करते है।

ऊँ प्राणय स्वाहः, व्यानाय स्वाः, उदानाय स्वाः, समानाय स्वाः, अपानाय स्वाः और आखीर में, ब्रह्मणे स्वाः। इस प्रकार उच्चारकर नैवेद्य करते हैं (आचमन करके)। अब हम गुरूमार्गी है तो सिर्फ आचमन करके छःबार सद्गुरू नामः स्मरण (ऊँ श्री साईनाथाय नमः) तब भी वही कार्य गुरूशक्ति से ज्यादा प्रभावशाली होता है। हम जो वायु सांस से अन्दर लेते है, उसके भी पाँच भाग होकर अपने अपने कार्य करते हैं, वायु के पाँच भाग :

प्राण – चैतन्य

व्यान – चलना–घुमना (Movement)

उदान – रक्ताभिसरण (Blood circulation)

समान – विचार शक्ति

अपान – विसर्जन

नैवेद्य करते समय वायुतत्व शुद्ध करके जब ईश्वरीय शक्ति या गुरूशक्ति का आह्वान होता है तब वह तेज और आकाश तत्व की धारणा उपस्थित लोगों में अपनी अपनी धारण क्षमता के अनुसार होकर बची हुई शक्ति वातावरण में और तीर्थ प्रसाद में धारण होती है। 'तेज' और 'आकाश' तत्व की धारणा 'आप' तत्व में सबसे ज्यादा होती है। इसीलिए हमने ऐसा अनुभव लिया होगा कि जब तेज और आकाश तत्व वातावरण में बढ़ते है तब 'आप' तत्व याने बरसात होती है। गुरूपौर्णिमा, कार्यकेन्द्र के उत्सव सेमिनार के वक्त, इत्यादि अवसर पर थोड़ी बहुत बरसात होने की एक वजह ये भी है।

इसीलिये आरती या पूजा के समय प्रसाद या पेढ़ा न हो तो चलता है लेकिन तीर्थ जरूर रखते हैं, जिसे प्राशन करके वह गुरूशक्ति का लाभ हमें आसानी से होता है।

यह प्राशन करने वाला प्रसाद हमारे शरीर में धारण हुए दूषित अन्न की प्रतिकूलता निकालकर हमारा देहिक एवं आत्मिक विकास साध्य कर देता है।

प्रतिभा अभिषेक या पादुका अभिषेक के तीर्थ में उस प्रतिमा या पादुका में धारण हुई शक्ति का अंश और वह अभिषेक करते समय साधक की वाणी से जो सद्गुरूनामः स्मरण होता है उसका आघत आप तत्व पर मतलब पंचामृत या पानी पर होकर उसमें गुरूशक्ति समाई जाती है। ऐसे तीर्थ का महत्व इसलिए ज्यादा होता है।

2. धारण करने वाला प्रसाद :

कोई भी व्यक्ति जब कार्यकेन्द्र पर पहली बार आता है, तब गुरूवलय, प्रसाद के स्वरूप में उस व्यक्ति पर गुरूकृपा से धारण हो जाता है। उदी लगाने से या दोरो बांधने पर भी यही गुरूवलय की धारणा होती है।

जीवन में सुख, शांति, समाधान प्राप्त करने के लिए शरीर के पंचमहाभूत तत्वों के संतुलन के साथ अपना हर रोज का कर्म, अपने शरीर माध्यम के साथ एक रूप होना जरूरी होता है। उसके लिए हमारे देहिक वलय की गति, आत्मिक वलय की गति और धारण होने वाले कर्म की गति समान होनी आवश्यक हैं, इन गतियों को संतुलित रखने का कार्य यह धारण हुआ गुरूवलय, उदी/दोरा इन माध्यमों से करना है।

इसी के साथ वातारण की प्रतिकूल वलय (Vibration) हमारे माध्यम में धारण न हो इसलिए Protection देने का कार्य भी इस प्रसाद के माध्यम से होता है।

उसी प्रकार धारण होने वाले हर एक कर्म में एक गुरूशक्ति का अंश गुरूवलय के माध्यम से डाला जाता है, जिससे उस व्यक्ति के अंतर्मन में कोई प्रतिकूल कर्म धारण होने के बावजूद भी, प्रतिकूल कार्य करने के खिलाफ विचार पैदा हो और दया, क्षमा, शांति यह ईश्वरीय शक्ति के गुण उसके माध्यम से प्रकट हो।

3. पूजन करने वाला प्रसाद :

कार्य केन्द्र पर आने वाले व्यक्ति को कामकाज में जो श्रीफल पूजन करने के लिए दिया जाता है वह पूजन करने वाला प्रसाद है।

आने वाले भक्त के घर में उपासना, दैविक पूजा अर्चना करने के बावजूद अगर सुख–शांति–समाधान नहीं होता है, या कोई कठिनाई दूर नहीं हो रही है तो इसका मतलब यह है कि उस परिवार में पीढ़ियों से किया हुआ पूर्णकर्म संचित नहीं है या फिर पुण्य तो है लेकिन उसे धारण करने के लिए आवश्यक देहिक एवं आत्मिक विकास आज उस परिवार में किसी का भी नहीं है। जैसे दादा–परदादा ने उस परिवार में जो पूण्य जप, जाप्य, होम–हवन, व्रत–व्यकल्ये निभाकर संचित किया उसका लाभ लेने के लिये, पीढ़ीत व्यक्ति को वह व्रत वैकल्य यम–नियम सम्भलकर उपासना करना जरूरी है। अब भी वह संचित कृपा उसके आज के परिवार में प्रवाहित हो सकती है। आज दुनिया बदल रही है जीवन गतिमान हो गया है; तो कोई भी आदमी पूर्वजो जैसी उपासना नहीं कर सकता लेकिन सद्‌कर्म का लाभ तो लेता है। इसीलिए पूजन का प्रसाद कार्यकेन्द्र पर से दिया जाता है।

इस पूजन किये हुए श्रीफल में पाँच तत्व होते है। पृथ्वी, आप और वायु तो किसी भी नारीयल में होता है। उस नारीयल में कुछ प्रमाण में तेज और आकाश तत्व भी होता है। यह पाँच तत्व मनुष्य के पाँच तत्वों से जुड़ सकते है। गुरूशक्ति श्रीफल में धारण करके वह अपने देहिक और आत्मिक माध्यम में प्रवाहित हो सकती है। उसी प्रकार हमारा कर्म भी नारीयल में धारण होकर हम ला सकते है। (गुरूको समर्पण करने के लिए) इसलिए नारीयल भगवान के सामने चढ़ाते है। प्रसाद देते समय श्रीफल का पूजन करके साधक गुरूशक्ति के माध्यम से उस श्रीफल में तेज और आकाश की धारणा कर देता है।

वह प्रसाद प्राथमिक अवस्था में उस परिवार की पीढ़ीयों से संचय कर्म और आज का प्रवाहित होने वाले कर्म के बीच में एक ब्रीज (Bridge) बना देता है और उसमें गुरूशक्ति का अंश धारण कर देता है। जिससे उस परिवार में, वास्तु में सुख–शांति–समाधान की प्राप्ति होती है।

इस प्रसाद के माध्यम से उस परिवार में हुई देहिक एवं वैदिक उपासना का लाभ (पूर्वजों के समय) आज की पीढ़ी में होता है। उसी प्रकार वं. दादाजी ने सिद्ध किये हुए विमोचन और दीक्षाओं का लाभ भी गुरूशक्ति के माध्यम से इस प्रसाद का पूजन करके हर एक भक्त को प्राप्त होता है।

परिवार में सेवा करने वाले व्यक्तियों का देहिक और आत्मिक विकास होकर प्रपंच में समाधान की प्राप्ति होती है और परमार्थ का आरम्भ होता है।

इस अवस्था में नियमित उपासना/साधना करके आने वाले भक्त को ज्ञान–कर्म–धर्म इन तीन अवस्थाओं का लाभ कर लेना होता है। इन अवस्थाओं के बारे में अगले अंक में बात करते है।

जनम जनम का सेवक

"साई निकेतन"

शुभं भवंतु

1. Know for certain that he who feeds the hungry really serves me. Regard this as an eternal truth.
2. Joy and sorrow are mere delusions.
3. I speak the truth, nothing but the truth.
4. Let anybody speak hundreds of things against you, do not react by giving any bitter reply.
5. Look at the mango tree in blossom. If all the flowers mature to fruits, how splendid it would be! But do they? Most fall off.

"साई निकेतन"

सूचना

इस साल की होने वाली सेमीनार "द्वारकामाई" जयपुर में 18 अक्टूबर से 22 अक्टूबर 2013 तक होना निश्चित हुआ है अधिक से अधिक गुरूबन्धु–भगनी आने का प्रयत्न करें। आने की सूचना देहली केन्द्र पर सितम्बर 2013 तक भेजने का कष्ट करें।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible